DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO - 9415376545
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Date..14/04/2020

क्या राजनीतिशास्त्र विज्ञान है ?

राजनीतिशास्त्र का ज्ञान क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित है। राजनीतिशास्त्र राज्य और सरकार का क्रमबद्ध अध्ययन करता है। इसकी अपनी विशेष सामग्री और क्षेत्र है। जिसमें यह तथ्यों का संग्रह करता है। उनको क्रमबद्ध ढंग से सम्बन्धित करता है। तथा उनके आधारपर सिद्धान्तों और नियमों का सामान्यीकरण करता है।

वैज्ञानिक पद्धतियों का अध्ययन राजनीतिशास्त्र के अध्ययन की निश्चित पद्धतियाँ हैं। यहाँ विद्वानों द्वारा तथ्यों का पता, पर्यवेक्षण द्वारा लगाया जाता रहा है। साथ ही सम्पूर्ण संसार समय एवं परिस्थिति के अनुसार प्रयोगशाला रहा है। तथा प्रत्येक नया कानून, नीति और कार्य एक प्रयोग हैं। प्रजातंत्र, समाजवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ सब इसके प्रयोग हैं। साथ ही हम ऐतिहासिक तुलनात्मक पद्धतियों को भी अपनाते रहे हैं।

अध्ययन सामग्री के प्रकृति में स्थायित्व एवं एकरूपता – राजनीतिशास्त्र में तथ्यों के विषयों में पर्याप्त एकता पायी जाती है। यदि एकता की कुछ कमी है तो वह विषय की वैज्ञानिकता का अभाव नहीं है। बल्कि मानव स्वभाव में बदलाव होता रहता है। जैसा कि ब्राइस कहते हैं "मानवप्रकृति की प्रवृत्तियों में एकरूपता तथा समानता होती है जिसकी सहायता से हमें यह पता चलता है कि एक ही प्रकार के कारणों से प्रभावित होकर मनुष्य बहुधा एक ही प्रकार के कार्य करता है फिर कार्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है, उन्हें सम्बन्धित एवं श्रृंखलाबद्ध कर परिणाम निकाले जा सकते हैं।"

राजनीतिशास्त्र में भी निश्चित नियम और परिणाम होते हैं। ये नियम और परिणाम प्रवृत्तियों के सूचक होते हैं। जब हम कहते हैं कि असमानता से क्रान्तियाँ होती हैं, प्रजातंत्र अच्छी सरकार है, मताधिकार से राजनैतिक चेतना आती है। तब सापेक्षिक रूप से ये परिणाम सही हैं क्योंकि हम समाजिकशास्त्रों में भौतिकशास्त्र की निश्चितता की आशा नहीं कर सकते।